Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID:- rajgopal7455@gmail.com

Locke: Refutation of Innate Ideas
(जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धान्त का निराकरण)

लॉक के अनुभववादी दार्शनिक हैं। इनका मानना है कि मानव मन में कोई भी प्रत्यय (ज्ञान) जन्मजात नहीं होता है। समस्त ज्ञान जन्म लेने के पश्चात अनुभव के द्वारा उत्पन्न और विकसित होता है। आधुनिक अनुभववादी दार्शनिक मानव मस्तिष्क की तुलना रिक्त स्लेट, कोरी पाटी, सफेद कागज आदि से करते हैं। इनके अनुसार हमारा संपूर्ण ज्ञान अनुभवजन्य है। बाह्य जगत का ज्ञान बाह्य इन्द्रियों से और आन्तरिक जगत का ज्ञान आन्तरिक निरीक्षण से होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए संवेदना एवं स्वसंवेदना का होना आवश्यक है। ज्ञान इन्द्रिय सापेक्ष है। उच्च से उच्च विचार भी अनुभवजन्य है।

उल्लेखनीय है कि लॉक से पूर्व बुद्धिवादी दार्शनिक देकार्त, स्पिनोजा, लाइबनिज आदि ज्ञान का स्रोत बुद्धि को मानते थे। उनका कहना था बुद्धि में अनेक जन्मजात प्रत्यय हैं, जैसे ईश्वर, आत्मा, आत्मा की अमरता एवं अनश्वरता, कारण-कार्य नियम, धार्मिक एवं नैतिक मूल्य के प्रत्यय आदि मे सभी सहज प्रत्यय हैं। इसे सार्वभौम तथा अनिवार्य कहा जाता है। ऐसे ज्ञान हमें इन्द्रियों से प्राप्त नहीं होता है इसलिए इसे जन्मजात प्रत्यय कहते हैं। ऐसे ज्ञान जन्म से ही मानव मस्तिष्क में विद्यमान रहते हैं। लॉक ने बुद्धिवादी विचारों का खंडन कर अनुभववादी विचारों का व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। इसलिए जॉन लॉक को आधुनिक अनुभववादी विचारधारा का प्रवर्तक कहा जाता है।

जॉन लॉक के अनुसार सहज प्रत्यय को मानने से निम्नलिखित हानि होती है। इससे दर्शन के क्षेत्र में एक भ्रान्ति उत्पन्न होती है। जिसके कारण हम अपनी ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता को सीमित करते हैं, इससे वैज्ञानिक ज्ञान की उपेक्षा होती है। दूसरी हानि यह है कि यह मनुष्य को आलसी एवं अहीत बनाता है। एक बार सहज प्रत्यय मान लिये तो उस पर फिर शंका करने की, खोज करने की कोई जरूरत नहीं है। यह सत्य से भागने का अंधविश्वास को मानने का और रूढ़ियों को प्रश्रय देने का सिद्धान्त है। राजनीतिक एवं धार्मिक लोग किसी भी विचार को सहज और जन्मजात प्रत्यय बताकर सामान्य जनता को बेवकूफ बनाते हैं। लॉक के शब्दों में सहज प्रत्यय मानने का उद्देश्य लोगों को तर्कशक्ति एवं निर्णय की क्षमता से दूर रखना है जिससे उन पर मानसिक गुलामी एवं आसानी से शासन किया जा सके। इसी प्रकार लॉक ने सहज प्रत्यय का खंडन कर एक नवीन विचारधारा का सूत्रपात किया जिसे अनुभववाद के नाम से जानते हैं।

सहज प्रत्ययों के खंडन हेतु लॉक के तर्क :⇒

(i) सर्वसम्मति पर आधारित तर्क :- बुद्धिवादियों का कहना है कि कुछ प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों को लेकर प्रायः लोगों में आम सहमति पायी जाती है। जैसे- अभेद का नियम, व्याघात का नियम आदि। ये प्रत्यय जन्म से आत्मा में उपस्थित नहीं होती तो इन पर सर्वसम्मति नहीं होती। लॉक का कहना है कि सर्वसम्मति प्रत्ययों का जन्मजात होने का प्रमाण नहीं है सर्वसम्मति को अनुभव के आधार पर ही प्रमाणित करते हैं, इससे यह प्रमाणित नहीं होता है कि वस्तु का प्रत्यय उसके प्रत्यक्ष से पूर्व आत्मा में निहित है। प्रायः किसी भी प्रत्यय पर सभी लोगों की सर्वसम्मति नहीं होती है, पागलो, मूर्खों और बच्चों को इन प्रत्ययों के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है।

Scanned with CamScanner

(ii) नैतिक और धार्मिक प्रत्यय भी सहज नहीं है:- नैतिक और धार्मिक प्रत्यय भी सहज नहीं है क्योंकि वे सर्वमान्य नहीं है। ये प्रत्यय कुछ लोगों के लिए शुभ है तो वहीं दूसरे लोगों के लिए अशुभ भी हो सकता है। जो एक व्यक्ति के लिए न्यायपूर्ण है तो दूसरे व्यक्ति के लिए अन्यायपूर्ण भी हो सकता है। कुछ लोग नैतिक नियमों को निरपेक्ष तो कुछ लोग सापेक्ष मानते हैं। जहाँ देकार्त ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात मानता है। लॉक के अनुसार संसार में निरीश्वरवादियों की कमी नहीं है। इसके अलावा जो लोग ईश्वर को मानते हैं, उनमें ईश्वर के प्रत्यय और स्वरूप को लेकर मतांतर है। इससे यह प्रमाणित होती है नैतिक और धार्मिक किसी भी प्रत्यय पर सर्वसम्मति असंभव है।

(iii) अनिवार्यता एवं स्वयंसिद्धियों पर आधारित तर्क:- बुद्धिवादियों ने अनिवार्य प्रत्ययों एवं स्वयंसिद्धियों के आधार पर जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धान्त को माना है। इनका मानना है कि कुछ प्रत्यय अनिवार्य रूप से सत्य है यदि वे जन्मजात न होते तो आपातिक रूप में सत्य होते अर्थात कभी सत्य तो कभी असत्य होते। ज्यामिति और तर्कशास्त्र के क्षेत्र में कुछ नियम स्वतः सिद्ध होते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए अन्य नियमों की आवश्यकता नहीं होती है। अतः ये नियम जन्म से आत्मा में निहित होते हैं।

इसको खंडन करते हुए लॉक ने कहा है कि किसी प्रत्यय के अनिवार्य सत्य के आधार जन्मजात नहीं माना जा सकता है। इन प्रत्ययों का भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपातिक कथनों के समान प्रयास करना पड़ता है। ज्यामिति एवं तर्कशास्त्र के कथन भी निरपेक्ष अनिवार्य नहीं होते बल्कि सापेक्ष सत्य होते हैं। अनेक ज्यामितिकारों ने युक्लिड के कुछ प्रमेयों को नहीं माना है। अतः अनिवार्य और स्वयंसिद्ध कथन भी जन्मजात नहीं होते हैं। इनका भी ज्ञान आपातिक कथनों के ज्ञान के समान ही होता है।

Scanned with CamScanner

(iv) जन्मजात प्रत्यय के मानने वालों का कहना है कि किसी भी प्रत्यय को जन्मजात कहने का अर्थ है कि उसका स्पष्ट ज्ञान न होकर उसका आत्मा में अव्यक्त रूप में निहित होना है। कोई ज्ञान आत्मा में जन्म से निहित है इसका मतलब यह है कि जो ज्ञान आत्मा में निगूढ़ है उसको विकसित करने की आवश्यकता है। इस प्रकार से इन्द्रियानुभव का कार्य आत्मा में अन्तर्निहित ज्ञान को अभिव्यक्त करना है।

लॉक के अनुसार यह एक भ्रामक दृष्टिकोण है। ज्ञान कभी भी आत्मा में अव्यक्त नहीं हो सकता है। कोई प्रत्यय मानव बुद्धि में जन्म से निहित हो, फिर भी उसका ज्ञान न हो यह विरोधाभासी बातें हैं। अतः आत्मा ज्ञान से रहित है। लॉक इसे आलंकारिक भाषा में कोरी पट्टी, रिक्त स्लेट, अंधेरी कोठी इत्यादि के समान कहा है। अतः अनुभव रहित ज्ञान अकल्पनीय है।

(v) बुद्धिवादियों के अनुसार ज्ञान आत्मा की अन्तर्वस्तु है, जिसका आत्मा से अविभाज्य संबंध होता है। लाइबनिज के अनुसार यदि आत्मा को स्वरूपतः ज्ञान से युक्त न माना जाय तो यह जड़ हो जायेगा। इसलिए लाइबनिज ने आत्मा को एक सक्रिय चिद्बिंदु माना है इसलिए इसमें बीजरूप में समस्त विश्व का ज्ञान निहित है।

लॉक ने इसका खंडन किया है उसका मानना है कि आत्मा में कुछ मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं। जैसे- मनुष्य स्वाभावतः दुःख से दूर भागता है, सुख के प्रति आकर्षित होता है। इसके अलावा, भूख, निद्रा, भय, कामुकता, सहज प्रवृत्तियाँ हैं जो पशु जातियों एवं मानव में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। लॉक मानव की सहज प्रवृत्तियों एवं स्वाभाविक क्रियाओं को ज्ञान नहीं मानता है।

Scanned with CamScanner